

श्रीमद्भगवद्गीता आधारित संतुलित प्रकृति – शुद्ध पर्यावरण

भावना तिवारी

शोधार्थी, समाज कार्य विभाग, पंजीयन सं. DA2200170

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश।

Email - tivaribhawana@gmail.com

सारांश: प्रस्तुत शोध पत्र श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांतों का समाज कार्य शिक्षा और पर्यावरणीय जागरूकता के संदर्भ में अध्ययन करता है। मध्य प्रदेश के इंदौर जिले में BSW और MSW छात्रों किए गए पायलेट अध्ययन के माध्यम से यह विश्लेषण किया गया कि गीता के सिद्धान्त जैसे निष्काम कर्म, समत्व भाव और वसुधैव कुटुंबकम् समाज कार्य और पर्यावरणीय संरक्षण के क्षेत्र में कैसे उपयोगी हो सकते हैं। अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि 62% छात्र भगवद् गीता ग्रंथ से परिचित हैं और उनमें से 67% मानते हैं कि गीता के सिद्धांत समाज कार्य में नैतिक जिम्मेदारी, समानता, और पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा दे सकते हैं। 62% छात्रों ने माना है कि समत्व भाव जैसे सिद्धांत समाज में जातिवाद और लिंग भेद को कम कर सकते हैं। इसी प्रकार, वसुधैव कुटुंबकम् का सिद्धांत पर्यावरणीय संकट जैसे जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से निपटने में सहायक हो सकता है। समाज कार्य शिक्षा में गीता के सिद्धांतों का समावेश छात्रों को नैतिक जिम्मेदारी, पर्यावरणीय संकटों के समाधान और समानता के प्रति जागरूक करता है। यह सिद्धांत उन्हें समाज में व्यावहारिक बदलाव लाने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रेरित करते हैं। वर्तमान समय में, जब पर्यावरणीय संकट और सामाजिक परिवर्तन तेजी से बढ़ रहा है, गीता के सिद्धांत समाज कार्य में सतत विकास, पर्यावरणीय संरक्षण, और सामाजिक न्याय की दिशा में एक प्रभावी उपकरण बन सकते हैं। यह शोध न केवल शिक्षा प्रणाली में गीता के सिद्धांतों को जोड़ने की आवश्यकता को रेखांकित करता है, बल्कि सरकार और समाज कार्यकर्ताओं के लिए एक स्पष्ट दिशा भी प्रदान करता है। गीता के सिद्धांतों का समावेश समाज कार्य शिक्षा और पर्यावरणीय जागरूकता में एक स्थायी और सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

मुख्य शब्द: श्रीमद्भगवद्गीता, संतुलित प्रकृति, शुद्ध पर्यावरण, समाज कार्य शिक्षा, पर्यावरणीय जागरूकता, निष्काम कर्म, समत्व भाव, आत्मसंयम, वसुधैव कुटुंबकम्, पर्यावरणीय जिम्मेदारी।

1. प्रस्तावना: आज का युग तेजी से बदल रहा है, जहां एक तरफ वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी विकास ने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरणीय संकट, सामाजिक असमानता, और नैतिक मूल्यों का पतन गंभीर समस्याएं बन चुके हैं। ऐसे समय में समाज कार्य शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को नैतिक जिम्मेदारी, सामाजिक जागरूकता, और पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति प्रेरित करना है। श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांत इन समस्याओं का व्यावहारिक समाधान प्रदान करते हैं। निष्काम कर्म (Selfless Action) समाज कार्यकर्ताओं को स्वार्थ रहित सेवा के लिए प्रेरित करता है। समत्व भाव (Equality) समाज में जातिवाद और लिंग-भेद जैसी असमानताओं को समाप्त करने का मार्ग दिखाता है। वसुधैव कुटुंबकम् (The World is One Family) यह सिखाता है कि पर्यावरण और समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी समान होनी चाहिए।

(श्लोक क्र. 47 अध्याय 2) “कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥”

यह श्लोक छात्रों को प्रेरित करता है कि वे अपने कार्य में परिणाम की चिंता किए बिना समाज और पर्यावरण की भलाई के लिए समर्पित रहें।

भूतकाल में, गीता के सिद्धांतों का उपयोग केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन के रूप में किया गया। वर्तमान में, समाज कार्य शिक्षा और पर्यावरणीय जागरूकता के संदर्भ में इन सिद्धांतों का महत्व तेजी से बढ़ा है। भविष्य में, इन सिद्धांतों का उपयोग शिक्षा प्रणाली, सरकारी नीतियों, और समाज सुधार अभियानों में किया जा सकता है।

एक समाज कार्यकर्ता के रूप में, मेरा मानना है कि छात्रों को पर्यावरणीय संरक्षण, समानता, और नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करना आज की सबसे बड़ी प्राथमिकता है। महाविद्यालयों में गीता के सिद्धांतों को समाज कार्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल कर छात्रों को व्यावहारिक समाधान और आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ प्रशिक्षित किया जा सकता है।

(श्लोक क्र. 8 अध्याय 4) “परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥”

इस श्लोक के माध्यम से स्पष्ट होता है कि गीता के सिद्धांतों का उद्देश्य समाज में धर्म और नैतिकता की स्थापना करना है।

(श्लोक क्र. 18 अध्याय 5) “विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥”

यह श्लोक दर्शाता है कि हमें सभी प्राणियों के प्रति समान दृष्टिकोण रखना चाहिए। समाज में समानता और समरसता लाने के लिए हमें हर व्यक्ति और प्रकृति के हर हिस्से को समानता का भाव रखना चाहिए।

स्पष्ट है कि गीता के सिद्धांतों का समावेश समाज कार्य शिक्षा और पर्यावरणीय जागरूकता में वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए अनिवार्य है।

2. तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण:

- **श्रीमद्भगवद्गीता:** गीता की रचना लगभग 5000 वर्ष पहले महाभारत के काल में हुई थी। यह भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में अर्जुन को दिया गया उपदेश है। जब अर्जुन अपने कर्तव्यों को लेकर भ्रमित और मानसिक रूप से कमजोर हो गए थे, तब श्रीकृष्ण ने उन्हें धर्म, कर्म, और जीवन के उद्देश्य को समझाने के लिए गीता का ज्ञान दिया। गीता का उद्देश्य है मनुष्य को नैतिक जिम्मेदारी, निष्काम कर्म, और आध्यात्मिक जागरूकता का मार्ग दिखाना।
- **संतुलित प्रकृति:** मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करना, ताकि प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित और टिकाऊ उपयोग हो।
- **शुद्ध पर्यावरण:** पर्यावरण को प्रदूषण और हानिकारक तत्वों से मुक्त रखना, जो सतत विकास और स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।
- **निष्काम कर्म:** निःस्वार्थ सेवा भाव से फल की चिंता किए बिना कार्य करना। यह समाज कार्य और पर्यावरण संरक्षण में नैतिक कर्तव्य को बढ़ावा देता है।
- **समत्व भाव:** सभी प्राणियों और व्यक्तियों के प्रति समानता और सम्मान का भाव, जो सामाजिक असमानताओं को समाप्त करने में सहायक है।
- **वसुधैव कुटुम्बकम्:** “दुनिया एक परिवार है” का विचार, जो वैश्विक भाईचारे और पर्यावरणीय संतुलन को बढ़ावा देता है।

3. गीता के श्लोक और सम्बन्ध:

- **निष्काम कर्म:**

“योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनञ्जय।

सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥” (अध्याय 2, श्लोक 48)

यह श्लोक समाज कार्यकर्ताओं को प्रेरित करता है कि वे किसी भी प्रकार के परिणाम के बिना निष्पक्ष और स्वार्थहीन रूप से कार्य करें। यह सिद्धांत पर्यावरणीय संरक्षण के लिए भी उपयुक्त है।

- समत्व भावः

“विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥” (अध्याय 5, श्लोक 18)

यह श्लोक समाज में जातिवाद, लिंगभेद, और सामाजिक असमानताओं को समाप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

- वसुधैव कुटुंबकम्:

“उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥” (अध्याय 6, श्लोक 5)

यह श्लोक पर्यावरणीय संकटों से निपटने के लिए वैश्विक भाईचारे और संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल देता है।

4. शोध अध्ययन का महत्व: भारत में पर्यावरणीय संकट और सामाजिक विषमताएँ न केवल आज की, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक बड़ी चुनौती बन चुकी हैं। भारतीय संस्कृति और दर्शन में हमेशा से नैतिकता, कर्तव्य, और परस्पर सामंजस्य का महत्व रहा है। समाज कार्य के क्षेत्र में कार्यरत लोग न केवल समाज की सेवा करते हैं, बल्कि वे समाज के नैतिक उत्थान और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता, भारतीय दर्शन का एक अमूल्य ग्रंथ, नैतिकता और कर्तव्य का मार्गदर्शन करते हुए, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने की शिक्षा देता है। गीता के सिद्धांत, जैसे:

निष्काम कर्म: स्वार्थहीन सेवा का महत्व, जो समाज कार्यकर्ताओं को अपने व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर कार्य करने की प्रेरणा देता है।

समत्व भाव: समानता की भावना, जो जातिवाद, वर्ग-भेद और लिंग-भेद जैसी समस्याओं को समाप्त करने में सहायक है।

वसुधैव कुटुंबकम्: “संपूर्ण विश्व एक परिवार है” का सिद्धांत, जो पर्यावरणीय संरक्षण और वैश्विक भाईचारे को बढ़ावा देता है।

भारतीय समाज में, जहाँ जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का अति-उपयोग, और सामाजिक असमानताएँ विकराल रूप ले रही हैं, गीता के ये सिद्धांत न केवल समाज कार्य शिक्षा के लिए, बल्कि एक सतत और संतुलित भविष्य के निर्माण के लिए भी मार्गदर्शक हो सकते हैं।

इस शोध का उद्देश्य गीता के सिद्धांतों के माध्यम से समाज कार्य शिक्षा को सशक्त बनाना है, ताकि समाज कार्यकर्ता न केवल सामाजिक असमानताओं को समाप्त करें, बल्कि प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्य स्थापित करने में भी योगदान दें। यदि गीता के ये सिद्धांत समाज कार्य शिक्षा और नीति निर्माण में अपनाए जाए, तो भारत समाज सुधार और पर्यावरणीय संरक्षण में एक नई दिशा में अग्रसर हो सकता है। अतः स्पष्ट है कि गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि समाज और प्रकृति के उत्थान का एक अमूल्य साधन है।

5. शोध अन्तराल: समाज कार्य शिक्षा में गीता के सिद्धांतों का समावेश कम है। वर्तमान में, गीता के सिद्धांतों का पर्यावरणीय जागरूकता और समाज कार्य के व्यावहारिक समाधान के रूप में उपयोग बहुत सीमित है।

6. शोध पद्धति: अध्ययन की सार्थकता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि अध्ययन के दौरान वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया जाए। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग प्रस्तावित है:

7. शोध के उद्देश्य:

1. गीता के सिद्धांतों का समाज कार्य शिक्षा में योगदान समझना।
2. समाज और पर्यावरण पर गीता के सिद्धांतों के व्यावहारिक प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. समाज कार्य के छात्रों में गीता के सिद्धांतों के प्रति जागरूकता और उनके उपयोग की संभावनाओं का आकलन करना।

8. **शोध अभिकल्प:** प्रस्तुत शोध के अध्ययन में मिश्रित विधि (Mixed Method Approach) गुणात्मक (Qualitative) तथा मात्रात्मक (Quantitative) दोनों पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।

9. **क्षेत्र:** मध्य प्रदेश के इंदौर जिले के अंतर्गत समाज कार्य के संस्थान।

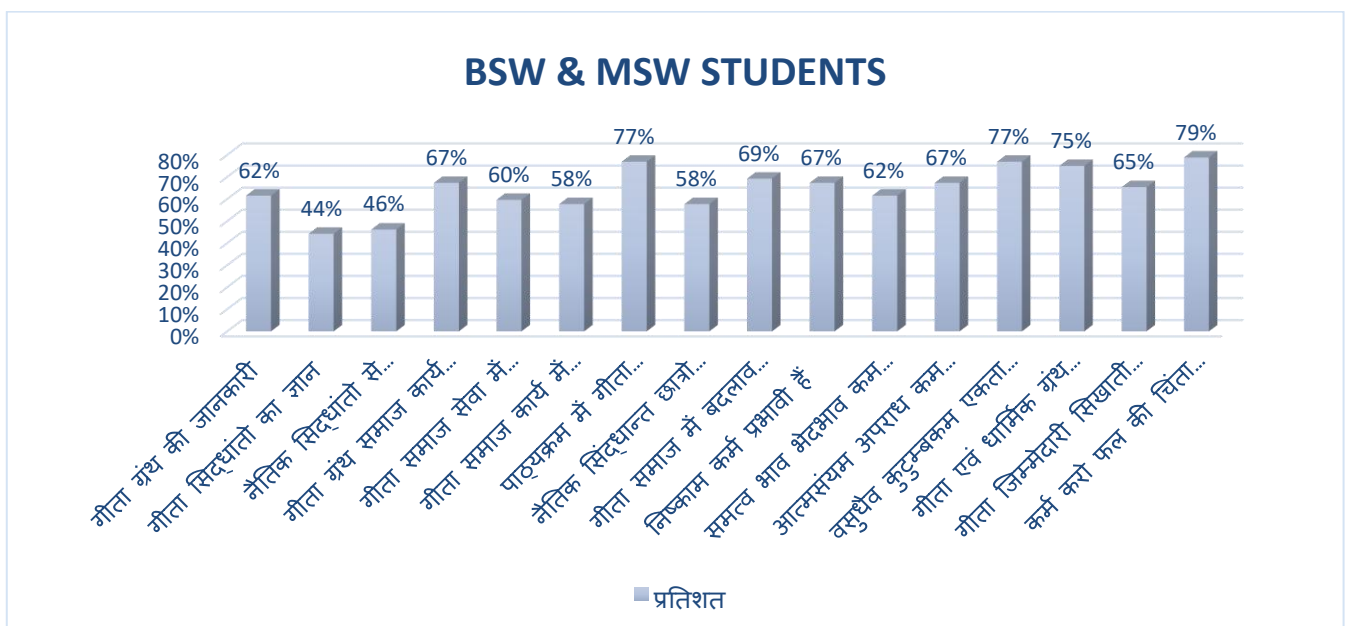
10. **निदर्शन का आकार:** प्रस्तुत शोध में BSW के द्वितीय और तृतीय वर्ष तथा MSW के प्रथम और द्वितीय वर्ष के कुल 52 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया। इनमें से BSW पाठ्यक्रम के 30 और MSW पाठ्यक्रम के 22 विद्यार्थियों से आंकड़े एवं जानकारी एकत्रित की गई।

11. **निदर्शन की इकाई:** प्रस्तुत में समाज कार्य का विद्यार्थी निर्देशन की इकाई है।

12. **निदर्शन पद्धति:** प्रस्तुत शोध में गैर-अनुपातिक प्रतिचयन विधि के Purposive Sampling विधि का उपयोग किया गया। इस विधि के तहत, उन विद्यार्थियों का चयन किया गया जो अध्ययन के उद्देश्य और मानदंडों को पूरा करते थे। चयन प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया गया कि उत्तरदाता BSW और MSW पाठ्यक्रम के विद्यार्थी हों।

13. **आंकड़ों का संकलन:** उपयुक्त शोध में आंकड़ों के संग्रह हेतु प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में कुल 20 प्रश्न शामिल थे, जिनका उद्देश्य गीता के सिद्धांतों के प्रति छात्रों की समझ और उनके समाज कार्य और पर्यावरणीय योगदान के विचारों को मापना।

14. **आंकड़ों का विश्लेषण:** प्रस्तुत शोध में आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं के आधार पर किया गया:



➤ गीता का महत्व समाज कार्य में: 67% छात्रों ने गीता के सिद्धांतों को समाज सेवा और समाज कार्य में सहायक माना, जो दर्शाता है कि गीता के सिद्धांत समाज कार्य के महत्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकार किए गए हैं।

75% छात्रों ने माना कि धार्मिक ग्रंथों के सिद्धांत समाज कार्य शिक्षा में उपयोगी हो सकते हैं, जो गीता के सिद्धांतों के समावेश की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

➤ गीता के सिद्धांतों की प्रभावशीलता: निष्काम कर्म (67%) और समत्व भाव (62%) को समाज कार्य में प्रभावी और भेदभाव को कम करने में सहायक पाया गया।

67% छात्रों ने माना कि आत्मसंयम सिद्धांत समाज में अपराध और हिंसा को कम करने में मदद कर सकता है।

“वसुधैव कुटुम्बकम्” सिद्धांत को 77% छात्रों ने समाज में एकता और भाईचारे को बढ़ावा देने वाला माना।

- पाठ्यक्रम में गीता का समावेश: 77% छात्रों ने सुझाव दिया कि गीता के सिद्धांत समाज कार्य पाठ्यक्रम में शामिल किए जाएं, जो इस बात को दर्शाता है कि छात्र इन सिद्धांतों को अपने पेशेवर जीवन में लागू करना चाहते हैं।
- समाज में सकारात्मक बदलाव: 69% छात्रों ने कहा कि गीता समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम है, जिससे यह सिद्ध होता है कि गीता के सिद्धांत केवल व्यक्तिगत जीवन में नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन में भी योगदान कर सकते हैं।

15. निष्कर्ष:

- गीता का प्रभाव समाज कार्य पर: गीता के सिद्धांत समाज कार्य में न केवल नैतिक जिम्मेदारी और स्वार्थहीन सेवा को बढ़ावा देते हैं, बल्कि वे सामाजिक समानता, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, और समाज में सकारात्मक बदलाव को भी प्रेरित करते हैं। छात्रों का मानना है कि गीता के सिद्धांतों को समाज कार्य शिक्षा में शामिल करना छात्रों को व्यावसायिक जिम्मेदारी और सामाजिक जागरूकता में और अधिक सशक्त बनाएगा।
- सामाजिक और पर्यावरणीय सुधार: गीता के सिद्धांतों का पालन करने से सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संकट से निपटने के लिए नई दिशा मिल सकती है। निष्काम कर्म और समत्व भाव सिद्धांत समाज में जातिवाद, लिंग भेदभाव, और आर्थिक असमानता को घटाने में सहायक हो सकते हैं।
- सतत विकास: "वसुधैव कुटुंबकम्" सिद्धांत के आधार पर, गीता हमें प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग करने और सतत विकास को बढ़ावा देने की प्रेरणा देती है।

16. शोध की सीमाएं:

- न्यायदर्श का आकार: यह अध्ययन केवल इंदौर जिले के कुछ छात्रों पर आधारित है, जिसका परिणाम सभी समाज कार्य छात्रों पर लागू नहीं हो सकता। अन्य क्षेत्रों या अलग-अलग शैक्षिक संस्थानों में गीता के सिद्धांतों पर छात्रों का दृष्टिकोण अलग हो सकता है।
- सांस्कृतिक और धार्मिक भिन्नताएं: गीता के सिद्धांतों को केवल हिंदू धार्मिक संदर्भ में देखा गया है, जबकि अन्य धार्मिक या सांस्कृतिक संदर्भ में इसके प्रभाव और उपयोग की पहचान नहीं की गई है।
- सिद्धांतों का वास्तविक अनुप्रयोग: यह अध्ययन केवल छात्रों की धारणा पर आधारित है, जबकि गीता के सिद्धांतों का वास्तविक जीवन में व्यावहारिक अनुप्रयोग और उसके लंबे समय तक प्रभाव का अध्ययन किया जाना चाहिए।

17. भविष्य में अनुसंधान की दिशा:

- इस अध्ययन को अधिक व्यापक नमूने के साथ विस्तारित किया जा सकता है।
 - समाज कार्य पाठ्यक्रम में गीता के सिद्धांतों को समाहित करने के प्रभावों और लाभों पर गहन अध्ययन किया जा सकता है।
 - अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अन्य धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों की भूमिका पर भी शोध किया जा सकता है।
- अतः स्पष्ट है कि यह शोध गीता के सिद्धांतों की प्रासंगिकता को समाज कार्य शिक्षा और पर्यावरणीय जागरूकता के संदर्भ में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है और यह सुझाव देता है कि गीता के सिद्धांत समाज में व्यापक बदलाव लाने और पर्यावरणीय संकट से निपटने में सहायक हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2021।
2. ईश्वरन, ई. (2007). भगवद् गीता: एक नई अनुवाद, निलगीरी प्रेस।
3. राजगोपालन, आर. (2005). पर्यावरणीय नैतिकता और सतत विकास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. सिंह, एस. & मिश्रा, पी.डी. (2000). भारत में समाज कार्य शिक्षा, रावत प्रकाशन।
5. बेकेट, सी. (2005). नैतिकता और समाज कार्य, सेज पब्लिकेशंस।
6. Sharma, K. (2018). "Relevance of Bhagavad Gita in Social Work Practices", Indian Journal of Social Work, 79(3), 215-230.



7. Jones, P. (2020). "Integration of Ethics in Social Work Education", International Journal of Social Work, 12(4), 300-310.
8. Ghosh, A. (2017). "Environmental Sustainability and Indian Philosophy", Journal of Environmental Studies, 10(2), 120-130.
9. Kumar, A. (2019). "Social Justice through Bhagavad Gita Principles", Indian Social Science Review, 5(1), 80-90.
10. Edwards, M. (2021). "Spiritual Values in Social Work: Lessons from Bhagavad Gita", Social Work and Religion Journal, 9(3), 150-160.
11. Gupta, R. (2015). "The Role of Bhagavad Gita in Ethical Decision Making", Ethics Journal of India, 14(2), 100-110.
12. Nair, P. (2016). "Bhagavad Gita and Environmental Consciousness", Journal of Indian Philosophy and Practice, 7(1), 50-60.
13. Subramaniam, S. (2014). "Application of Indian Philosophy in Modern Social Work", Indian Journal of Philosophy, 6(4), 200-210.
14. Mishra, V. (2019). "Bhagavad Gita as a Guide to Modern Social Challenges", Journal of Contemporary Social Studies, 11(3), 115-125.
15. Sharma, A. (2020). "Sustainable Development through Bhagavad Gita Teachings", International Journal of Indian Studies, 8(5), 190-200.
16. <https://www.jagran.com/spiritual/religion-geeta-jayanti-2021-5-shloka-of-geeta-which-give-right-direction-to-life-22290208.html>
17. https://youtu.be/ypxjmZ_OFw?si=iZ6Gj_eckhWSQxTJ
18. <https://youtu.be/-9oBsKtGd38?si=UzO8tSAvA5GJSGS8>
19. <https://youtu.be/l2MU7wveU9c?si=ZjVNshSthVhX398D>
20. https://youtu.be/s2bbePyJ2_g?si=whjY2h7CCqDGXYaq
21. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Bhagavad_Gita
22. <https://www.facebook.com/swami.ramdev/videos/881160363675810/?mibextid=rS40aB7S9Ucbxw6v>
23. <https://dkvaas.org/blogs-1/f/the-importance-of-social-work-in-the-bhagavad-gita>
24. <https://rjhssonline.com/HTMLPaper.aspx?Journal=Research%20Journal%20of%20Humanities%20and%20Social%20Sciences;PID=2019-10-2-37>
25. <https://www.newdelhitimes.com/relevance-of-hinduism-in-social-work-education>